संवाद

शिक्षा के संदर्भ में अनेक परिवर्तन हुए हैं जिनका कारण समाज की बदली हुई परिस्थितियाँ हैं और उन बदली हुई परिस्थितियों की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए नव-चिंतन को प्रोत्साहित करना आवश्यक है। *प्राथमिक शिक्षक* के इस अंक में विभिन्न शोध लेखों के माध्यम से आपको शिक्षा के विभिन्न पक्षों के बारे में यथार्थ स्थिति से अवगत होने का अवसर मिलेगा। इसके साथ ही वैचारिक लेखों से शिक्षा से जुड़ी अनेक अवधारणाओं के बारे में एक सही और स्पष्ट समझ का निर्माण करने में मदद मिलेगी। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के बाद से नीति की अनुशंसाओं के बारे में विमर्श गहन हुआ है और ऐसे मंच भी उभरकर आए हैं जो नीति की महत्वपूर्ण अनुशंसाओं को क्रियान्वित करने के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं। देश के अलग-अलग हिस्सों में शिक्षा किस प्रकार आकार ले रही है और उसके समक्ष किस तरह की चुनौतियाँ हैं — इसकी संवेदना और सरोकार उन चुनौतियों का सामना करने और समस्याओं का समाधान जुटाने में प्रस्तुत लेख मदद करेंगे। शिक्षा के संदर्भ में भाषा एक महत्वपूर्ण स्थान की अधिकारी है और इस अंक के लेख मातृभाषा, भाषा से जुड़ी शास्त्रीय दृष्टि का जिस रूप में वर्णन करते हैं और 'पढ़ना' की अवधारणात्मक समझ बनाते हैं — पठनीय हैं। सीखने-सिखाने की अनेक पद्धतियाँ प्रचलित हैं। इन प्रचलित पद्धतियों के प्रति सीखने-सिखाने वालों की क्या प्रतिक्रियाएँ रहती हैं— इनकी जानकारी सीखने-सिखाने को संवर्द्धित करने में सहायक होती है। विशेष रूप से विद्यार्थी क्या सोचते हैं, उन्हें किस तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है —इनके जवाब और उन जवाबों के अनुरूप संशोधित शिक्षाशास्त्रीय प्रक्रिया किसी भी शैक्षिक चिंतन का मुख्य सरोकार है। पाठ्यपुस्तक संस्कृति और उससे संबद्ध सरोकारों को भी इस अंक में स्थान दिया गया है। शिक्षा से जुड़े मूल्य और उन मूल्यों का अर्जन भी सुविचारित रूप से लेखनीबद्ध किया गया है।

आशा है कि *प्राथमिक शिक्षक* के प्रस्तुत अंक में सम्मिलित किए गए लेख शिक्षा के संबंध में एक गहरी और सुलझी हुई समझ बनाने में मदद करेंगे।